ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-9* October (Part-1) 2021
Innovation The Research Concept

कोरोना महामारी के दौरान ऑनलाइन माध्यम का स्कूलों की शैक्षणिक प्रणाली पर प्रभाव

The impact of Online Medium on The Educational System of Schools During the Corona Epidemic

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 20/10/2021, Date of Publication: 24/10/2021

मीनाक्षी मीना
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग
जय नारायण व्यास
विशवविधालय, जोधपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान में वैश्विक परिदृश्य में संपूर्ण विश्व जगत के सामने कोरोना एक महामारी के रूप में उभरकर हमारे सामने आया है। कोरोना महामारी के चलते स्कूल बन्द चल रहे है ऐसे में पाठ्यक्रम पूरा करवाने के लिए ऑनलाइन शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है । परिवर्तन की दिशा में work from home बढ़ा है। ई-लर्निंग से बच्चे शिक्षा से जुड़ रहे है। उन्हें घर बैठे शिक्षा उपलब्ध करवाई जा रही है। यद्यपि यह शिक्षा का उचित विकल्प नहीं कहा जा सकता ऐसी स्थिति में सभी शिक्षण संस्थाओं ने ऑनलाइन कक्षाएं प्रारम्भ की है लेकिन ये आभासी शिक्षा बच्चों के लिए लाभकारी होगी या नहीं? क्योंकि इस भयानक महामारी की वजह से स्कूलों को बंद करना पड़ा जिसके कारण शिक्षा से जोड़ने के लिए स्कूलों ने जूम, गूगल क्लासरूम, स्काइप, यूट्यूब चैनल, रेडियों, माइक्रोसॉफ्ट टीम, व्हाट्सप आदि को अपनाना ही एक मात्र रास्ता है परन्तु क्या इस ऑनलाइन शिक्षा से शैक्षणिक जरूरतें पूरी हो पायेगी ? और क्या हमारे भारतीय समाज के परिवेश के अनुकूल रहेगी ? इस महामारी के कारण बदलती शिक्षा प्रणाली कहीं मानसिक पीड़ा की शुरुआत तो नहीं है। क्योंकि इस ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थी ज्ञान के साथ-साथ कई खतरनाक ऐप्स से भी जुड़ रहे है जिसका असर उसके मानसिक स्तर पर पड़ रहा है साथ-साथ ही वह समाज से कटता भी जा रहा है। इस इंटरनेट और वर्चुअल वर्ल्ड के वर्तमान दौर में बच्चों में यह ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली साधक की बजाय बाधक न साबित हो जावें। कोरोना महामारी ने संपूर्ण दुनिया की शिक्षण संस्थाओ के समक्ष अनगिनत चुनौतियाँ व समस्याओं को उजागर किया है जिसका असर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों और शिक्षको दोनों पर हुआ है । यह शोध अध्ययन कोविड-19 महामारी के दौरान सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शैक्षणिक प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभावों पर आधारित है।

In the present global scenario, Corona has emerged in front of us in the form of an epidemic in front of the whole world. Schools are being closed due to Corona epidemic, in such a situation, more emphasis is being given on online education to complete the syllabus. Work from home has increased in the direction of change. Children are getting involved in education through e-learning. Education is being provided to them sitting at home. Although it cannot be said to be a proper alternative to education, in such a situation all the educational institutions have started online classes, but will this virtual education be beneficial for the children or not? Because of this terrible epidemic, schools had to be closed, due to which schools have adopted Zoom, Google Classroom, Skype, YouTube Channel, Radio, Microsoft Team, WhatsApp etc. to connect with education is the only way, but is this online education? Will the educational needs be met? And will it be compatible with the environment of our Indian society? The changing education system due to this pandemic is not the beginning of mental suffering. Because due to this online education, students are connecting with many dangerous apps along with knowledge, which is affecting their mental level as well as they are getting cut off from the society. In the present era of this internet and virtual world, this online education system among children should not prove to be a hindrance instead of a seeker. The Corona pandemic has exposed countless challenges and problems before the educational institutions all over the world, which have had an impact on both the students and teachers of government and private schools. This research study is based on the impact on the educational system of government and private schools during the Kovid-19 epidemic.

मूलशब्द ऑनलाइन शिक्षा, महामारी, चुनौतियाँ , वर्चुअलवर्ल्ड, इंटरनेट.
Keywords Online education, Pandemic, Challenges, Virtual World, Internet.

प्रस्तावना

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 12 मार्च 2020 को कोविड-19 को महामारी घोषित किया था। कोरोना वायरस बीमारी ने दुनिया भर के अरबों लोगों के जीवन को खतरे में डालते हुए दुनिया को एक प्रणालीगत ठहराव के लिए खड़ा कर दिया है। गत दशकों से इतिहास के बारे में पता चलाता है कि जब कोई रोग दुनिया के बड़े स्तर पर फैल जाता है तो वह न केवल लोगों के रहन-सहन को पूरी तरह बदल देता है बल्कि व्यापार, राजनीति और अर्थव्यवस्थाओं पर भी असर डालता है। कोविड-19 नामक वायरस ने भी भारतीय समाज में कई आमूलचूल परिवर्तन कर दिये है जिससे पूरा भारतीय समाज प्रभावित हो रहा है।

19 मार्च को 30 मिनट के लाइव टेलीकास्ट के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी ने सभी नागरिकों को 22 मार्च को सुबह 7 बजे से 9 बजे तक 'जनता कर्फ्यू' के लिए जनता को कहा। इस दौरान सभी को घर पर रहने को कहा गया था। लॉकडाउन के चलते स्कूल बन्द चल रहे है ऐसे में पाठ्यक्रम पूरा करवाने के लिए ऑनलाइन शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है अतः सिक्के दो पहलू हमारे समक्ष उत्पन्न होते है यदि सकारात्मक रूप में देखा जाये तो ऑनलाइन शिक्षा हमारे लिए उपयोगी है तो वही स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि घन्टो मोबाईल पर पढ़ाई करने से बच्चो की आँखें कमजोर हो सकती है और स्पाइन मे दिक्कत आ सकती है साथ ही बच्चों का ऑनलाइन होमवर्क पूरा करवाने के लिए माता-पिता को अलर्ट रहना पडेगा । नेत्र रोग विशेषज्ञों के मुताबिक मोबाईल पर पर लगातार पढ़ाई करने से बच्चों की आँखों का पानी सूख जाता है। बच्चे की आँखें कमजोर होती है और उससे सिर दर्द की समस्या भी हो जाती है। से भले ही मनुष्य में हताशा के साथ नकारात्मकता बढ़ी है फिर भी विज्ञान व तकनीक से वह देश दुनियाँ से जुड़कर ठहरे जीवन को गति प्रदान कर रहा है।

परिवर्तन की दिशा में 'work from home' बढ़ा है। घर से ही office कार्य सम्पादित किये जा रहे है। ई-लर्निंग से बच्चे शिक्षा से जुड़ रहे है। उन्हें घर बैठे शिक्षा उपलब्ध करवाई जा रही है। यद्यपि यह शिक्षा का उचित विकल्प नहीं कहा जा सकता परन्तु लाकडॉउन और इस महामारी के समय शिक्षा से जुड़ाव का माध्यम अवश्य बना है। ऑनलाइन शिक्षा से शिक्षार्थियों को ज्ञान तो प्राप्त होगा लेकिन उनका मनोज्ञान एक रोबोट की तरह मशीनी बन जाएगा। वर्चुअल वर्ल्ड व इंटरनेट के प्रयोग से वर्तमान समय में बच्चों-युवाओं जो पहले से ही समाज से दूर होते जा रहे है। ऑनलाइन शिक्षा संतुलित व्यक्तित्व का विकास तथा सामाजिक स्थिति के विकास में बाधा भी उत्पन्न हो रही है।

शैक्षणिक क्षेत्र पर कोरोना महामारी का प्रभाव

वर्तमान में वैश्विक परिदृश्य में संपूर्ण विश्व जगत के सामने कोरोना एक महामारी के रूप में उभरकर हमारे सामने आया है।है। दुनिया की 7.8 बिलियन आबादी की एक तिहाई से अधिक आबादी इस महामारी की वजह से एक मजबूर हो गई है। राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।CMIE (सेन्टर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनॉमी) की रिपोर्ट के मुताबिक 25 मार्च 2020 से शुरू लॉकडाउन के कारण देश के करीब 12.20 करोड़ लोगों को नौकरी गंवानी पड़ी थी। (राजस्थान पत्रिका, 28 मार्च, 2020) । भारत की अर्थव्यवस्था व सामाजिक जीवन के अलावा कोरोना ने शिक्षा व्यवस्था को भी सर्वाधिक प्रभावित किया है। कोविड-19 वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए शैक्षिक संस्थाओं स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं कोचिंग सेन्टर जहाँ सामूहिक रूप से छात्र व शिक्षक रहते हैं ऐसी स्थिति में संक्रमण फैलने की संभावनाएं अत्यधिक बढ़ जाती है। इसलिए सबसे पहले सरकार ने शिक्षण संस्थाओं को बंद करने का निर्णय लिया। प्रारम्भ में तो ये माना गया कि एक दो माह में स्थिति सामान्य हो जायेगी लेकिन कोविड-19 की वैक्सीन नहीं बन पाने के कारण पूर्ण शैक्षिक सत्र 2020-21 पर ही सवालियां निशान लग गया। ऐसी स्थिति में सभी शिक्षण संस्थाओं ने ऑनलाइन कक्षाएं प्रारम्भ की लेकिन ये आभासी शिक्षा बच्चों के लिए लाभकारी होगी या नहीं ? क्योंकि इस भयानक महामारी की वजह से स्कूल, कॉलेज को बंद

करना पड़ा ताकि संक्रमण को रोका जा सकें। इसके कारण शिक्षा से जोड़ने के लिए स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों ने जूम, गूगल क्लासरूम, स्काइप, यूट्यूब चैनल, रेडियों, माइक्रोसॉफ्ट टीम, व्हाट्सप आदि को अपनाना ही एक मात्र रास्ता है परन्तु क्या इस ऑनलाइन शिक्षा से शैक्षणिक जरूरतें पूरी हो पायेगी ? और क्या हमारे भारतीय समाज के परिवेश के अनुकूल रहेगी ? इस महामारी के कारण बदलती शिक्षा प्रणाली कहीं मानसिक पीड़ा की शुरुआत तो नहीं है। क्योंकि इस ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थी ज्ञान के साथ-साथ कई खतरनाक ऐप्स से भी जुड़ रहे है जिसका असर उसके मानसिक स्तर पर पड़ रहा है साथ-साथ ही वह समाज से कटता भी जा रहा है। इस इंटरनेट और वर्चुअल वर्ल्ड के वर्तमान दौर में बच्चों और युवाओं में यह ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली साधक की बजाय बाधक न साबित हो जावें।

वर्तमान समय में विशेषकर स्कूलों में ऑनलाइन माध्यम से कक्षाएं शुरू कराई जा रही है। लेकिन समस्या की बात ये है कि शहरी क्षेत्रों में भी लगभग 15 प्रतिशत यूजर लैपटाप, कम्प्यूटर का प्रयोग करते है और लगभग 85 प्रतिशत यूजर मोबाइल फोन के माध्यम से से डिजिटल गतिविधियों से शिक्षा ग्रहण कर रहे है। इस तकनीकी व ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने से बच्चों की आँखों व मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है और यदि हम ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की बात करते है तो लॉकडाउन के दौरान ग्रामीण बच्चों की शिक्षा पर पूर्णरूप में विराम लग गया है।क्योंकि ग्रामीण में ज्यादातर कृषक आबादी निवास करती है और उनके पास एंड्रोइड मोबाइल फोन की उपलब्धता भी आसानी से नहीं होती है साथ ही साथ नेटवर्क की समस्या या अभाव भी होता है। इसी समस्या की वजह से कोविड-19 महामारी काल में ग्रामीण बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए केन्द्र सरकार ने टेलीविजन व रेडियों के माध्यम को निःशुल्क प्रसारित करवाया जा रहा है ताकि हमारे देश की शैक्षणिक व्यवस्था प्रभावित ना हो सके। देखा जाये तो ग्रामीण हमारे भारत की रीढ़ है जब तक ग्रामीण सशक्त नहीं होगा, तब तक हम विकास के पथ पर गतिशील नहीं हो सकते।

"सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है और प्रेरित करती है। इस तरीके से हम सार के रूप में कह सकते है कि उनके मुताबिक शिक्षा का अर्थ सर्वांगीण विकास है।" महात्मा गाँधी का यह कथन शिक्षा के सर्वांगीण विकास के प्रमुख उद्देश्य को व्यक्त करता है परन्तु वर्तमान कोविड-19 नामक महामारी ने भारत की परम्परागत शिक्षा प्रणाली के सम्पूर्ण ढ़ाँचे को ही धराशाही कर दिया है। इस महामारी ने शिक्षा प्रणाली के सामने ऐसी चुनौती प्रस्तुत की है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली व उससे सम्बन्धित समस्त संस्थाएँ भारत में शिक्षा के भविष्य के सम्बन्ध में एक बार पुनः प्रारम्भ से सोचने पर मजबूर हो गई है।

शिक्षण संस्थाओं के समक्ष चुनौतियाँ

यूनेस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट के मुताबिक कोविड-19 वैश्विक महामारी से शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक व विद्यार्थी को काफी नुकसान उठाना पड़ेगा। कोरोना वायरस महामारी के कारण दुनिया भर के सभी स्कूलों ने अपने दरवाजे बंद कर दिए है। लेकिन साथ ही साथ ऑनलाइन का व्यापार भी तेज गति से शुरू होने लगा है। इस महामारी ने शिक्षा प्रणाली के सामने ऐसी चुनौतियाँ प्रस्तुत की है जिन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली व उसके संस्थाओं को वर्तमान व भविष्य में शिक्षा का स्वरूप क्या होगा ? पर सोचने को विवश कर दिया हैं।

उत्पादन और सेवा क्षेत्र के बाद तीसरा सबसे बडा क्षेत्र शिक्षा ही आता है। जो वैश्विक महामारी के कारण कड़ी मार झेल रहा है। लॉकडाउन ने शिक्षा पर कड़ा प्रहार किया है। महामारी के अन्तर्गत शिक्षण कार्य करवाना प्रमुख चुनौतियों में से एक है। ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा में आई चुनौतियों को अवसर में बदला जा सकता है। कोरोना महामारी ने सम्पूर्ण दुनिया के शिक्षण संस्थाओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ प्रस्तुत कर दी है जैसे बार-बार संस्थान के परिसर को सेनेटाईज करना, कक्षाओं में शारीरिक दूरी का पालन करवाना, बार-बार विद्यार्थियों व स्टॉफ के हाथ धोने या सेनेटाईज करने हेतु उन्हें संसाधन उपलब्ध करवाना, सभी से मॉस्क लगवाना या अन्य नियमों का पालना करवाना। इन सभी चुनौतियों से पार पाने के लिए शिक्षण संस्थाओं में अत्यधिक मेहनत करनी होगी क्योंकि

विकसित देशों में तो ये संसाधन उपलब्ध करवाना सुनिश्चित किया जा सकता है परन्तु भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ सरकारी विद्यालयों में सार्वजनिक सुविधाओं का भी अभाव पाया जाता है, वहाँ इन सब संसाधनों व नियमों की पालना करवाना अत्यन्त चुनौतीपूर्ण हो जाता है। शिक्षा, शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य अन्तः क्रिया पर आधारित एक सहकारी प्रक्रिया है। इस महामारी ने शिक्षा के मूल तत्त्व अन्तः क्रिया को ही समाप्त कर दिया है। जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से पर्याप्त शारीरिक दूरी बनाये रखने के लिए विवश है, ऐसे समय में शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य अन्तः क्रिया किस प्रकार सम्पादित होगी ? ये भी एक बड़ा प्रश्न है। कोरोना महामारी के कारण आज हमारी शिक्षा प्रणाली व संस्थाएँ सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्षों से प्रभावित हुई है।

कोरोना नामक इस महामारी ने विद्यार्थियों के भविष्य के साथ-साथ शिक्षकों के भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। शिक्षकों के साथ समस्या यह है कि ऐसे महामारी व परिस्थितियों से निपटने एवं ऐसी परिस्थितियों में शिक्षण करवाने का इससे पूर्व उनके पास कोई अनुभव नहीं है तथा ना ही परम्परागत कक्षा-कक्ष शिक्षण के अलावा भारत में अन्य किसी उपागम पर बल दिया गया है। ऑनलाइन शिक्षण भारत में प्रारम्भ तो हुआ है परन्तु अधिकांश शिक्षक वर्ग ना तो उसके लिए प्रशिक्षित है तथा ना ही उसके पास व्यक्तिगत स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण हेतु संसाधन उपलब्ध है, साथ ही वर्तमान में गूगल मीट, जूम, यूट्यूब जैसी अनेक प्रणालियां बाजार में उपलब्ध है जिनमें से किस सुरक्षित माध्यम का प्रयोग किया जाएं, इसके सम्बन्ध में भी शिक्षक वर्ग में शंका बनी हुई है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध के उद्देश्य अर्न्तगत कोविड-19 महामारी का शैक्षणिक प्रणाली पर प्रभाव के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ कई बिन्दुओं पर अध्ययन किया जायेगा जो इस प्रकार हैं-

1. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के दौरान विधार्थियों एवं शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओ की जानकारी लेना।
2. विधार्थियों का तकनीकी संसाधनों से जुड़ने पर उन पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की जानकारी लेना।

अध्ययन पद्धति

इस महामारी ने शिक्षा के परम्परगत कक्षा-कक्ष शिक्षण से ऑनलाइन शिक्षण की और कदम बढ़ाने को मजबूर केर दिया है जिसका असर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों और शिक्षको दोनों पर हुआ है । यह शोध अध्ययन कोविड-19 महामारी के दौरान सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शैक्षणिक प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभावों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तगर्त राजस्थान राज्य के जोधपुर जिले (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र) के 5 सरकारी एवं 5 निजी विद्यालयों को अध्ययन के लिए शामिल किया गया जायेगा। । सरकारी एवं निजी विधालयो में से कुल 50 विद्यार्थियों 50 शिक्षकों को उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण पद्धति के आधार उत्तरदाताओं का चयन करके अध्ययन किया जायेगा ।

अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के तथ्यों को एकत्रित किया जायेगा। प्राथमिक आकड़ो के लिए उत्तरदाताओ से साक्षात्कार-अनुसूची के माध्यम आवश्यक जानकारी एकत्रित की जायेगी साथ ही साथ द्वितीयक आकड़ो के लिए न्यूज-पेपर रिपोर्ट्स, सरकारी आकड़ो आदि का प्रयोग किया जायेगा ।

तथ्यों का आकार -

Table No - 1

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं के प्रकार	सरकारी विद्यालय के उत्तरदाता	निजी विद्यालय के उत्तरदाता	कुल उत्तरदाताओं की संख्या
1.	शिक्षक	25	25	50
2.	विधार्थी	25	25	50
	कुल	50	50	100

प्राकल्पना

अध्ययन कार्य में अनुसंधानकर्ता कुछ तथ्यों को परिकल्पना के रूप में स्वीकार करता है। तत्पश्चात् वह स्वीकृत परिकल्पना में अपने शोध की कसौटी पर कसकर उसका परिक्षण करता है। वह यह जानने की कोशिश करता है कि उसके द्वारा कल्पित परिकल्पना सही है या गलत -

1. कोरोना महामारी के दौरान निजी विद्यालयों की उपेक्षा सरकारी स्कूलों को अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
2. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से विद्यार्थियों मे शिक्षा के प्रति अरुचि का विकास हुआ है।
3. ऑनलाइन कक्षाओं के कारण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है तथा बच्चों का शारीरिक विकास पूर्णतया बाधित हो रहा है।

सरकारी एवं निजी विधालयो में से कुल 50 शिक्षक- शिक्षिका उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्न :-(Table No-2)

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्न	सरकारी स्कूलों के शिक्षक शिक्षिका	निजी स्कूलों के शिक्षक शिक्षिका	सरकारी एवं निजी से कुल उत्तरदाता
1-	क्या ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्रणाली में आपके समक्ष समस्याएं या चुनौतियां आई	हाँ -23 नही -2	हाँ -18 नही -7	50
2-	क्या आपके पास ऑनलाइन शिक्षा संबंधी सभी तकनीकी वस्तुएं उपलब्ध थी ? यदि हां तो कौन-कौन ।	हाँ -20 नही -5	हाँ -25 नही -0	50
3-	क्या भविष्य में इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली को आप बढ़ावा देंगे?	हाँ -2 नही -23	हाँ - 8 नही -17	50

प्राप्त तथ्यों में 50 में से 41 शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा के आदान-प्रदान में चुनौतियों को स्वीकारा जबकि 9 उत्तरदाताओं को कंप्यूटर ज्ञान की वजह से ज्यादा परेशानी नहीं आई। 50 में से 45 के पास एंड्रॉयड फोन तकनीकी साधन उपलब्ध था जबकि 5 उत्तरदाताओं के पास किसी प्रकार का साधन नहीं था । 40 उत्तरदाताओं ने भविष्य में इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा नहीं दिए जाने में रुचि दिखाई हैं ।

सरकारी एवं निजी विधालयो में से कुल 50 विद्यार्थी उत्तर दाताओं से पूछे गए प्रश्नः-(Table No-3)

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्न	सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी	निजी स्कूलों के विद्यार्थी	सरकारी एवं निजी विद्यालयों से कुल उत्तरदाता
1.	क्या ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने में आपको रूची आई?	हाँ -9 नही-16	हाँ -10 नही-15	50
2.	इससे आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा?	हाँ -11 नही-14	हाँ -19 नही-6	50
3.	भविष्य में भी इस ऑनलाइन माध्यम से आपशिक्षा ग्रहण करने में दिलचस्पी रखते हैं?	हाँ -3 नही-22	हाँ -4 नही-21	50

विद्यार्थी उत्तरदाताओं में 50 में से 19 उत्तरदाताओं ने इस माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने में रुचि दिखाई है शेष ने नहीं , साथ ही 30 उत्तर दाताओं के अनुसार उनके स्वास्थ्य पर भी इस माध्यम का बुरा असर पड़ा है जैसे नींद नहीं आना, मोटापा बढ़ना, आंखों के नंबर बढ़ना आदि । 50 में से 46 उत्तर दाता भविष्य में इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली में अरुचि रखते हैं।

निष्कर्ष

किसी समस्या के प्रगतिशील निरूपण में तार्किक घटक के संबंध में किसी प्रश्न की स्थायित्व से संबंधित कारणों का विवरण दिया जाता है। यह सैद्धांतिक या व्यावहारिक चिंताओं के जवाबों के योगदान को सही ठहराने का भी प्रयास करता है। तर्क की मूलभूत आवश्यकता वैज्ञानिक रूप से परिणामी प्रश्नों के आधार को विस्तृत करना और वैज्ञानिक रूप से तुच्छ प्रश्नों से बचना है। प्राप्त तथ्यों की जानकारी से यह निष्कर्ष निकलता है कि कोविड-19 महामारी ने विश्व स्तर पर सभी के जीवन को बहुत प्रभावित किया है जिसका असर सभी शिक्षण संस्थाओं पर भी देखने को मिला है । इस महामारी ने ऑनलाइन मोड पर शिक्षा स्थानांतरित करने पर शिक्षण संस्थाओं को मजबूर कर दिया क्योंकि हमारे सामने और कोई विकल्प रहा ही नहीं महामारी में बचाव भी जरूरी था और शिक्षा का हस्तांतरण भी जरूरी था जिसके फलस्वरूप शिक्षकों व विद्यार्थी दोनों वर्ग को काफी समस्याएं और चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा । ऑनलाइन माध्यम शिक्षा पर भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अभी तक न के बराबर ध्यान दिया गया है परंतु इस महामारी के कारण शिक्षण संस्थाएं बिल्कुल बंद रहे ऐसा भी नहीं हो सकता क्योंकि बच्चों के भविष्य पर इसका बुरा असर पड़ सकता है इसलिए इस महामारी के दौरान सरकारी व निजी दोनों स्कूल के शिक्षकों व विद्यार्थियों को इस माध्यम का प्रशिक्षण दिया गया ताकि शिक्षा का आदान-प्रदान हो प्राप्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि निजी स्कूलों की अपेक्षा सरकारी स्कूलों को ज्यादा चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ा जो कि हमारी प्रकल्पना को सत्य साबित करता है लगभग सभी उत्तर दाता चाहे वह सरकारी स्कूल के हो या निजी स्कूल के उनके पास माध्यम ज्यादातर फोन तो उपलब्ध हैं परंतु इस माध्यम से कभी उन्होंने कक्षाएं ना के बराबर ली थी जिसके लिए उन्हें प्रशिक्षण भी लेना पड़ा ।

प्राप्त तथ्यों की जानकारियों से साबित होता है कि निजी व सरकारी दोनों ही स्कूलों के विद्यार्थियों ने ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने में अरुचि दिखाई है जो कि हमारी प्रकल्पना को सत्य साबित करता है जिसमें कल्पना की गई थी कि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अरुचि का विकास हुआ है । इस ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था में जब विद्यार्थी अपने ही परिवेश में घर में ही सीमित होते जा रहे हैं। कोरोना वाइरस के काल को नकारात्मक रूप के साथ सकारात्मक रूप मे भी देखा।

शोध अध्ययन के दौरान कुछ सकारात्मक पहलू भी हमारे समक्ष आए कि ऑनलाइन माध्यम से तकनीकी क्षेत्र में काफी विकास भी हुआ है लोग अपनी संस्कृति से रूबरू भी हुए हैं जैसे खाना या पेय पदार्थ को सेवन करने से पहले हाथ धोना,जूते चप्पल घर के बाहर उतारना, नमस्ते करना, पौष्टिक भोजन ,व्यायाम आदि सभी में बदलाव देखने को मिला है साथ ही साथ हमारे चारों तरफ का पर्यावरण भी काफी स्वस्थ और सुधरा-साफ हुआ है क्योंकि आवागमन के साधन बंद होने के कारण प्रदूषण ना के बराबर फैला है जो कि आम आदमी के स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है । परिवर्तन या बदलाव एक अवश्यंभावी क्रिया है कभी यह धीरे और कभी तीव्र गति से समाज में देखने को मिलती है यही परिवर्तन समाज को विकास की तरफ ले जाता है और इस महामारी ने भी शिक्षण संस्थाओं में तकनीकी विकास को काफी ऊंचा उठाया है जो कि हमारे आने वाले भविष्य में भी सहयोगी साबित होगी। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से शिक्षा के नियमों में कई तरह से परिवर्तन आए है। ऐसी स्थिति में शिक्षा के अन्तर्गत नवीन समाधान बहुत ही जरूरी नवाचार ला सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संपादकीय, राजस्थान पत्रिका ई-पेपर*
2. *संपादकीय, दैनिक भास्कर, ई-पेपर*
3. *जनसत्ता, 19 जून 2020, पृ. 6*
4. *इंडिया टूडे*
5. *पंजाब केसरी*
6. *यूट्यूब चैनल*
7. *क्रोनिकल करंट अफेयर्स*
8. *प्रतियोगिता दर्पण, जून-जुलाई*
9. *Report WHO*
10. *Report ICMR*
11. *Sridhar, G. N. (May 04, 2020). Govt job aspirants face 'uncertain' future as recruitments get delayed due to Covid. Hyderabad: The Hindu Business Lines Web Portal.*
12. *SINHA, T. A. (18 April, 2020 10:31 am). Uddhav Thackeray has failed to handle Covid crisis. Bring in Army to save Mumbai. The Print News Portal.*
13. *श्रीनिवास एम.एन. (1967), आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., नई दिल्ली*
14. *Thamilarasan, M., Medical Sociology, Rawat Publication, Jaipur.*